7-1-03

क्रोध के अग्नि रूप को समर्पित कर शीतल देवता बनो

आज जब मैं वतन में पहुँची तो क्या देखा कि बापदादा बहुत मीठी दृष्टि द्वारा चारों ओर के बच्चों को स्नेह और फुल फोर्स भरी शक्ति देने में बहुत बिज़ी है। मैं दूर से ही समीप का स्नेह और शक्ति लेते हुए सामने पहुँच गई। बापदादा बोले, आओ मेरे डबल लाइट स्वरुप शक्तिशाली लाइट हाउस बच्चे आओ, लेकिन आज जैसे मैं बाबा की बाहों में समाई तो सेकण्ड में ऐसे अनुभव हुआ जैसे बिल्कुल मैं निराकारी बिन्दू बन लाइट के सागर में समा गई हूँ। कुछ समय तो मुझे अपनी स्मृति नहीं रही। कुछ समय बाद बाबा ने हमारे मस्तक पर हाथ फेरते हुए कहा आओ बच्ची, आओ बच्ची, तो धीरे-धीरे मुझे स्मृति आई और अपने को बापदादा के सामने देख हर्षित हो रही थी। बापदादा बहुत स्नेह की दृष्टि देते बोले, बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? मैंने बोला बाबा आज तो विशेष मधुबन की पांच भुजाओं की (पांडव भवन, ज्ञान सरोवर, हॉस्पिटल, शान्तिवन, नीचे-ऊपर के आबू निवासी) और डबल फारेनर्स की याद लाई हूँ, साथ में दादी जी की बहुत-बहुत दिल की याद और समाचार लाई हूँ। इस समय दादी जी को शिवरात्रि धूमधाम से मनाने का बहुत उमंग है, बस यही चाहती कि हर कोने से शिवबाबा की जयन्ती का आवाज गूँजे और बापदादा की प्रत्यक्षता के निमित्त बनें, तो बापदादा मुस्कराये और बोले, बापदादा ने देखा कि निमित्त बनी दादी जी के संकल्प को चारों ओर उमंग से स्वीकार करते हैं। यही है बाप के संकल्प को रिगार्ड देना क्योंकि दादियों को साकार रूप में निमित्त बापदादा ने ही बनाया है। बाबा को खुशी है कि सब बच्चों को बापदादा से कितना प्यार है जो सब चाहते हैं बापदादा को प्रत्यक्ष करें। सब तरफ प्रोग्राम

अच्छी लगन से बना रहे हैं। बच्चे जानते हैं कि यह शिवरात्रि का रहस्य सिद्ध होना अर्थात् बाप की प्रत्यक्षता का आवाज फैलना। इसलिए बापदादा भी इनएडवान्स सब बच्चों को दिल की दुआओं से मुबारक दे रहे हैं और जो स्थान अथक बन मन्सा, वाचा की डबल सेवा द्वारा सन्देश देने में नम्बर वन आयेंगे उन्हें निमित्त याद सौगात भी देंगे। विदेश में भी जनक बच्ची सर्व तरफ अच्छा उमंग दिला रही है। सबके दिल में उमंग उत्साह का आवाज बाप के पास पहुँचता ही है। सिर्फ बापदादा यही चाहते हैं कि समय अनुसार सिर्फ प्रोग्राम बनाया, भाषण किया, प्रदर्शनी, सेमिनार किया यह तो करते आये हो लेकिन अब समय प्रमाण वाचा के साथ स्वयं भी बाप समान बन दिल की लगन से दिल तक सन्देश पहुँचायें। मास्टर दाता बन रूहानी अनुभूतियों की अंचली दे, प्रसाद दे, प्यासी आत्माओं की एक बूँद की प्यास मिटायें। उसके बाद बापदादा कुछ समय के लिए जैसे सामने होते बिल्कुल ही स्वीट साइलेन्स में समा गये और चारों ओर स्वीट साइलेन्स का वायब्रेशन फैला रहे हैं।

उसके बाद बाबा बोले और क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा सब देश विदेश के बच्चों ने अपनी पवित्रता की रिज़ल्ट आप को स्नेह से दी है। बापदादा मुस्कराते बोले बच्चों ने हिम्मत से लिखा तो है लेकिन अब इसी रिजल्ट को सम्पन्नता तक लाना ज़रूरी है। बापदादा को इस शिवरात्रि के प्रति एक और भी दिल का शुभ संकल्प है कि जैसे बच्चों ने पवित्रता प्रति संकल्प किया है ऐसे ही शिवरात्रि पर विशेष सबसे पहले जो पवित्रता का दूसरा महान विघ्न क्रोध अपनी और दूसरे की अवस्था को बहुत हलचल में लाता है। तो बाप बच्चों को इस शिवरात्रि पर विशेष इस अग्नि रूप को समर्पित कर शीतल देवता बनाना चाहते हैं। जैसे भक्ति में दूध के साथ अक के कड़वे फूल चढ़ाते हैं तो बापदादा चाहते हैं कि यह क्रोध भी कड़वा मन, कड़वा बोल है और इसका बीज अहंकार भी छिपा हुआ होता है। अहंकार सिर्फ देह-अहंकार नहीं लेकिन ज्ञानी बच्चों को अहंकार रोब के रूप में उल्टी

अथॉरिटी के रूप में आता है चाहे कोई विशेषता की अथॉरिटी, चाहे किसी कार्य करने की विशेषता की अथॉरिटी, चाहे बुद्धि के विशेषता की अथॉरिटी, निर्णय के विशेषता की अथॉरिटी, इन्चार्ज के विशेषता की अथॉरिटी यह सूक्ष्म अहंकार भी रोब व क्रोध के रूप में प्रत्यक्ष होता है। तो बापदादा की यह शुभ आश है कि इन सबको प्रभु प्रसाद जान इस कड़वे अक के फूलों को शिवरात्रि पर स्व परिवर्तन प्रति बापदादा को दिल के दृढ़ संकल्प सहित समर्पित करें। तो क्रोध ज्वाला की समाप्ति से योग ज्वाला रूप सहज ही बन जायेगा और प्रत्यक्षता का रूप सामने आ जायेगा।

उसके बाद बापदादा ने अपनी दादी जी को गोदी में ले मस्तक पर, पीठ पर हाथ फेरते बहुत प्यार से अपने में समा लिया। दादी जी भी उसी प्यार में समा गई। उसके बाद बापदादा चारों ओर के बच्चों को अपने दिल की दुआयें देते बोले, हर बच्चा राजा बच्चा बन सफल हो, सफल हो, सफल हो। बस ऐसा लग रहा था जैसे बापदादा हम बच्चों को बहुत जल्दी-जल्दी सम्पूर्ण पवित्रता के वरदान से मालामाल कर रहे हैं। ऐसे चारों ओर बहुत मीठी दृष्टि देते हुए हमें भी साकार वतन में भेज दिया।